International Journal of Applied Research 2016; 2(7): 925-926

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(7): 925-926
www.allresearchjournal.com
Received: 11-05-2016
Accepted: 12-06-2016

विनोद सोमकुवर
(सहायक प्राध्यापक), इतिहास विभाग, गजमल तुलशीराम पाटील महाविद्यालय, नंदुरबार

डॉ.मधुकर वि. पाटील
मार्गदर्शक – प्राचाय
संत जगनाडे महाराज शिक्षण मंडळाचे आर्टस कॉलेज, खापर जि.नंदुरबार

Correspondence
विनोद सोमकुवर
(सहायक प्राध्यापक), इतिहास विभाग, गजमल तुलशीराम पाटील महाविद्यालय, नंदुरबार

अहिल्याबाई होल्कर के प्रशासन द्वारा किए गए लोककल्याणकारी योजनाओं का ऐतिहासिक अध्ययन

विनोद सोमकुवर, डॉ. मधुकर वि. पाटील

सारांश
भारतवर्ष में स्त्रियों को देवियों के रूप में पुजने व सम्मान देने की प्रथा प्राचीनकाल से ही रही है। पृथ्वी को मातृदेवी के रुप में मानने का प्रमाण सिंधु–घाटी की सभ्यता से प्राप्त मुदरों मे मिलता है जिसके एक चित्र में स्त्री के पेट से पौधा निकलता दिखलाया गया है। हमारे देश में प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक बहुत सी ऐसी महिलाएं हूई हैं। जो अपने किसी न किसी गुण या विशेषता के कारण अक्सर चर्चित रही है, विरता, साहस इत्यादी उनमें से बहुत सी ऐसी भी महिलाएं हुई हैं जैसे बुद्धीमत्ता सुंदरता शौर्म जिनका शासन संचालन में प्रमुख योगदान रहा है। [1] नारी शक्ति के दिग्दर्शन कई रुपों में होते हैं। जिनमें सर्वप्रमुख हे ''देवी अहिल्याबाई होल्कर''
अठरावी शताब्दी में जहाँ पुरुषों का राज था पेशवा सर्वोच्च थे। उस समय अपने प्रशासन द्वारा सभी का दिल जीत समुचे भारतवर्ष में प्रसिद्ध होने वाली स्त्री अहिल्याबाई होल्कर है। अहिल्याबाई होल्कर ने एक स्त्री होने के बावजुद प्रशासन द्वारा जो लोककल्याणकारी कार्य किए वह अतुलनिय है एवं आज के शासकों को मार्गदर्शक भूमिका निभाने लायक है।
प्रस्तुत शोध का उद्देश्य अहिल्याबाई होल्कर के प्रशासन द्वारा किए गये कार्यों को समाज के सामने रखने का प्रयास है। खास कर खानदेश एवं मालवा के हित में जो लोककल्याणकारी योजनाएं आंकी गई उन्हें आगे लाने का प्रयास किया जा रहा है।

कूटशब्द: अहिल्याबाई होल्कर, प्रशासन, लोककल्याणकारी, ऐतिहासिक

प्रस्तावना
18वीं शताब्दी में महाराष्ट्र पर पेशवाओं का राज था। इस समय उन्होंने केवल महाराष्ट्र में ही नहीं तो समुचे उत्तर भारत पर अपना झंडा फहराया था। पेशवाओं के अंतर्गत बहुत से राजपरिवार आते थे। उन्हीं में से एक होल्कर घराणा या परिवार था। इस घराणे के प्रमुख मल्हारराव होल्कर थे। इन्होंने मालवा (मध्यप्रांत) के इंदुर (इंदौर) नगरी को अपनी राजधानी बनाया था। इसी होल्कर घराणे में देवी अहिल्याबाई का उदय हुआ। जिनका नाम समूचे भारत में गौरव से लिया जाता है। [2]
अहिल्यादेवी मल्हारराव होल्कर की बहू थी। वह खंडेराव होल्कर जी की बीबी बनकर इस घराणे में आई थी। लेकिन अहिल्यादेवी के हाथ में जब होल्कर घराणे कि सत्ता आई तब परिस्थितियाँ बहुत ही विपरीत थी। फिर भी उन्होंने हार न मानते हुऐ अपने कार्यों को बरकरार रखा। और उन्हीं कार्यों को करते समय उन्होंने बखुबी से प्रशासन भी किया। अपने शासन द्वारा उन्होनें लोगों का भला ही किया। ज्यादातर लोगों में ''लोक कल्याणकारी'' योजनाओं को लागु किया। इन्ही कार्यों की वजह से वह आज भारत के इतिहास में महत्वपुर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी है। [3]

क्षेत्रीय कार्य की अनुमती और अहिल्यादेवी
अहिल्यादेवी के पती खंडेराव जी का सन् 1754 में कुंभेरी की लड़ाई में देहान्त हो गया। तत्पश्चात् राजकार्य के अधिकार उनके पुत्र प्राप्त होने चाहिए थे लेकिन उनका पुत्र मालराव राजकाज संभालने के लिए असमर्थ था इसलिए राजकाज की जिम्मेदारी स्वयं अहिल्यादेवी और उनके ससुर पर आ गई। आगे जाकर दोनों ने मिलकर राजकाज चलाना आरंभ किया। सन् 1751 से सन् 1756 तक दोनों ने मिलकर सुचारु ढंग से राजकाज चलाया। [2]
सन् 20 मई 1766 में मल्हारावजी का देहान्त हो गया। इसके बाद मालेराव होल्कर गद्दी का वारीस बना । लेकिन मालेराव की अयोग्यता के कारण वास्तविक सत्ता अहिल्यादेवी की हाथों में ही थी। इसी बीच एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी वह यह थी कि मालेराव का स्वर्गवास हो गया (27 मार्च 1767) इस कारण अहिल्यादेवी बहुत ही दुःखी हुई।
मालेराव की मुत्यु पश्चात् होल्कर परिवार मे कोई वारीस नहीं बचा था। इस समय अहिल्यादेवी भी पुत्र वियोग में डूबी थी इसका फायदा उन्हीं के शत्रुओं ने उठाना चाहा। इस बात की खबर मिलते

ही अहिल्यादेवी इस वियोग से बाहर निकलीं एवं पेशवाओं के दफ्तर में सरदार का कार्य करने की इच्छा व्यक्त की। पेशवाओं ने उन्हें राज्य करने की अनुमती बहाल की। [4]

'महेश्वर' से प्रशासन का शुभारंभ

पेशवाओं की ओर से अहिल्यादेवी को प्रशासन करने की अनुमती मिलने के बाद वह मुलकी प्रशासन देखने लगी। फौजदारी प्रशासन चलाने की जवाबदारी तुकोजी होल्कर को दी। इस तरह अहिल्यादेवी अब सच में राज्य की अधिकारिणी बन गई थी।

अहिल्यादेवी के इंदौर में रहते ही घर के तीनों आदमियों का देहान्त हो गया था। इस कारण उनका वहाँ अब मन नहीं लगता था। इस कारण उन्होंने नई राजधानी बनाने का निश्चय किया। उस दृष्टि से नई जगह की खोज की जाने लगी। तब नर्मदा के तट पर बसा हुआ 'महेश्वर' गाँव उन्हें बहुत ही अच्छा लगा। यह गाँव सुरक्षा की दृष्टि से अधिक सुरक्षित था। इस कारण अहिल्यादेवी यहीं रहने लगी और यहीं से उन्हेंने अपना शासन चलाना आरंभ किया। महेश्वर में अब रोजाना दरबार लगने लगा और यहाँ से ही उनका वास्तविक शासन का कार्यकाल सुरु हुआ। [5]

अहिल्यादेवी की शासन सुधार की प्रमुख विषेशताएँ :

1) रघुनाथराव एव्म गंगोबा तात्या को सबक सीबाई

गंगोबा तात्या मल्हाराव होळकर जी का दिवान था। इस कारण उसे होल्कर के राज्य के संपत्ति की सभी जानकारी थी। उसके मन में लालसा उत्पन्न हुई एवं उसने इंदुर (इंदौर) पर आक्रमण करने का प्रयास किया। इसके लिए उसने रघुनाथरावजी का सहारा लिया। रघुनाथराव ने उनका साथ देने का फैसला किया। इस समय अहिल्यादेवी के कार्य के दर्शन होते हैं। उन्होंने अन्य मराठा सरदारों को पत्र लिखा एवं मदद मागीं। इसके अलावा उन्होंने माधवराव पेशवा को पत्र लिखा । पत्र में रघुनाथराव की करतूत के बारे में लिखा। रघुनाथराव को स्पष्ट बताया कि अगर आप इंदुर चलकर आए तो तलवार चलेगी। इससे रघुनाथराव को ध्यान में आ गया कि अहिल्यादेवी आमने–सामने कि लड़ने के लिए तैयार है अतः उन्होंने अपना हमला करने प्रयास बदल दिया। [6]

इस तरह अहिल्यादेवी होल्कर ने अपनी हिम्मत से एवं कार्य तत्परता से रघुनाथराव एवं गंगोबा तात्या का आक्रमण होने से अपने राज्य को बचाया।

शासन की सुरक्षा के लिए नए विभागों की निर्मिती

अहिल्यादेवीजी के हाथों में राज्य की वास्तविक शासन सत्ता आने के पश्चात् 'महेश्वर' को राजधानी बनाकर शासन करना प्रारंभ किया। शासन करने के लिए हर एक विभाग की रचना व नए सिरे से करने में व्यस्त हो गई । इस के लिए यशवंत नामक व्यक्ति को पुणे दरबार का प्रतिनिधि नियुक्त किया। इसके अलावा दूसरे प्रतिनिधि के तैर पर विठ्ठल गणेश नामक व्यक्ति की नियुक्ति की। वे लोग वहाँ की बातें अहिल्यादेवीजी को बताते थे। [7]

लगान व्यवस्था में सुधारणा करने का प्रयास

राज्य की आय बढ़ाने के बहुत से स्त्रोत थे। इनमें कृषि पर कृषकों से लगान वसुली जाती थी। अहिल्यादेवी के पुर्व इस लगान को वसुलने की कोई भी ठोस व्यवस्था नहीं थी। लेकिन अहिल्यादेवीजी के ध्यान में यह बात आते ही उन्होंने इस कार्य को पुरी बखुबी से निभाने के लिए नयी शासनव्यवस्था का शुभारंभ किया। अलग–अलग अधिकारियों की नियुक्तियाँ की। इसका प्रमुख कमाविसदर नामक अधिकारी को किया। [8]

लोगों के न्याय हेतु न्यायालयों की व्यवस्था

लोगों की रोजाना कुछ–ना–कुछ समस्याएँ होती थी उन्हीं समस्याओं का निपटारा करने के लिए अहिल्यादेवीजी अपने दरबार में रोजाना अदालत भरवाती थी। वह खुद न्यायदेवता के रुप में वहाँ मौजुद रहती थी। अनका कहना था कि जनता को यथायोग्य न्याय मिलना चाहिए। इसके लिए वह कुछ सगे संबंधियों को भी माफ नहीं करती थी। ज्यादातर पंचायत के द्वारा ही समस्याओं का निबटारा होता था। जनता पर कोई जुल्म कर रहा हो तो उसे वह कड़ी से कड़ी सजा देने से नहीं डरती थी। [9]

सुखे की स्थिति में जनता की सहायता हेतु हमेशा तत्पर

अहिल्यादेवीजी वास्तव में जनता के हित में राज्य करने वाली शासिका थी। मुझे जो राजपद मिला वह जनकल्याण हेतु ही मिला है ऐसा उनका मानना था। इस वजह से राज्य में कभी भी नैसर्गिक समस्याएँ खड़ी होने पर वह जनता को मदद करती थी। अनाज, रुपये सभी जनता के लिए खर्च करने के आदेश देती थी। [10]

निष्कर्ष

अहिल्यादेवी जी को अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में शासन करने का अवसर प्राप्त हुआ था। इसके बावजुद भी उन्होंने कभी अपने कदम डगमगाने नहीं दिए इसका ज्ञान हमें प्राप्त होता है।

ससुर और लड़के की मृत्यू पश्चात् भी केवल जनता की सेवा करने हेतु अपने आप को सभांलकर शासन करना आरंभ किया। किले का संचालन व्यवस्था को चलाना बखुबी जानती थी। न्यायव्यवस्था निष्पक्ष और न्यायायिक थी। जनता को बुनियादी सुविधा उपलब्ध कराना कर्तव्य मानती थी। अन्याय और अत्याचार को मिटाना उनके जीवन का उद्देश्य था। अतः कहा जा सकता है कि समाज की भलाई के लिए ही उन्होंने अपना आजीवन कार्य किया।

संदर्भग्रंथ

1. सुधा गोस्वामी – भारतवर्श की चर्चित महिला, उपकार प्रकाशन, आगरा, पृ.क्र.01
2. एम.आई.राजस्वी – अहिल्याबाई होल्कर, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली 2010, पृ.क्र.09
3. य.न.केळकर – काही अप्रसिद्ध ऐतिहासिक चरित्रे, डायमंड पब्लिकेशन्स, पुणे में 2008, 128
4. देवीदास पोटे – अ.–अहिल्याबाईचा, अहिल्याबाई होळकर स्मारक समिती, मुंबई2014 पृ.क्र.35
5. विनया खंडपेकर – ज्ञात–अज्ञात अहिल्याबाई होळकर, राजहंस प्रकाशन, पुणे 2007, पृ.क्र.103
6. सुमती लेले – अहिल्याराणी होळकर, लोकवाङःमय गृह, मुंबई 2004, पृ.क्र.10
7. डॉ.सौ.सुलोचना अशोक पाटील – होळकर कुलभुशण अहिल्यादेवी, जळगाव 2000, पृ.क्र.66
8. वही – पृ.क्र.70
9. ओमप्रकाश वसंत नजन – अहिल्याबाई होळकर, सांकेत प्रकाशन, पुणे 2007 पृ.क्र.53
10. देशपांडे, हजीरनीस व.ग. त्रैमासिक संशोधक, इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे, जुन–सप्टें. 1998, पृ.क्र. 31